



E-ISSN: 2706-8927

P-ISSN: 2706-8919

www.allstudyjournal.com

IJAAS 2020; 2(4): 176-179

Received: 11-08-2020

Accepted: 13-09-2020

सपना कुमारी

शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा,
बिहार, भारत

कामकाजी महिलाएँ एवं पारिवारिक संगठन एक अध्ययन

सपना कुमारी

सारांश

कामकाजी महिलाएँ जो घरों के बाहर नियमित रूप से आर्थिक या व्यवसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती हैं काम (श्रम करने वाले स्वयं श्रम करना ही नहीं, वरन दूसरे व्यक्तियों से काम लेना तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन आदि देना भी सम्मिलित है। आज के भौतिकवादी परिवेश में हर महिला का श्रमजीवी होना एक अनिवार्यता बन गयी है। घर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पति और पत्नी दोनों का ही कार्य करना आवश्यक हो गया है जिससे पत्नी की परम्परागत प्रस्थिति एवं भूमिका में परिवर्तन आये हैं घर के बाहर काम करने के कारण पत्नी को घर और बाहर दोनों ही क्षेत्रों की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है। इस तरह दोहरी भूमिका को निभाने में उसकी शक्ति और समय खर्च दोनों होता है और इसका परिणाम यह होता है कि पारिवारिक संबंधों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। गृह कार्य के लिये समय का अभाव होता है। एक ही समय में घर की व्यवस्था करना और नौकरी पर जाने की तैयारी करना आसानी से सम्भव नहीं है। महिलाएं अपने पति को स्वामी न मान कर एक मित्र की भांति मानने की भावना इन महिलाओं में परिलक्षित होती है। इस कारण श्रमजीवी महिलाओं के दाम्पत्य जीवन के साथ ही परिवारों में तनाव की स्थिति प्रारंभ हो जाती है।

कूटशब्द: कामकाजी महिलाएँ, पारिवारिक संगठन, आर्थिक

प्रस्तावना

महिलाओं के द्वारा घर की चार दीवारी से बाहर निकल कर कोई भी आर्थिक कार्य करना सामाजिक प्रतिष्ठा के विरुद्ध माना जाता था। वर्तमान में महिलाओं को आर्थिक रूप में आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। स्वतंत्रता एवं समानता के सांवैधानिक अधिकारों, बढ़ती हुई जनसंख्या, महिलाओं में बढ़ती जागरूकता एवं शिक्षा तथा सुविधाओं और विलासता के साधनों की मांग ने महिलाओं की आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया है। आज पे घर की चार दिवारों से बाहर निकलकर लगभग सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। भारतीय समाज को विवाहित श्रमजीवी महिलाओं की दोहरी भूमिका होती है। एक ही साथ वे कार्यकर्ता के साथ-साथ गृहणी भी होती है। इन दोनों भूमिकाओं में संघर्ष की भूमिका बनी रहती है। यदि गृहणी की भूमिका वह बड़ी ही ईमानदारी से निभाये तो कार्योर्जन की भूमिका धूमिल पड़ेगी (बोगल 1960) श्रमजीवी महिला (कामकाजी) शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली महिला के संदर्भ में की जाती है। अर्थात् वे महिलाएं जो घरों के बाहर नियमित रूप से आर्थिक व व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती हैं।

Corresponding Author:

सपना कुमारी

शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा,
बिहार, भारत

काम करने का तत्पर्य स्वयं कार्य करना ही नहीं बल्कि दूसरे व्यक्तियों से काम लेना तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन आदि देना भी सम्मिलित है।

यदि श्रमजीवी महिलाएँ कार्योंजन की भूमिका में अत्यधिक रुचि ले तो गृहणी की भूमिका की उपेक्षा होगी श्रमजीवी महिलाओं के जीवन में यह विरोधाभास की समस्या है यदि परिवार के सदस्य उसकी दोनों भूमिकाओं को समर्थन न प्रदान करें तो वह परिवार और कार्य से भलीभाँति समायोजित नहीं कर सकती।

एक परम्परागत परिवार की सामाजिक संरचना में पति-पत्नी के आपसी संबंधों के विशिष्ट ढांचे में यह स्वीकार किया गया है कि परिवार में पुरुष का प्रमुख होगा और नारी उसके अधीन होगी। परिवार चाहे संयुक्त हो या एकांकी पत्नी को मुख्यतः विभिन्न भूमिकाओं के अनुरूप अपनी अपेक्षाओं और दायित्वों के पूर्ति करनी होती है। व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा जीवन में सुख, समृद्धि एवं विलासिता संबंधी भौतिक वस्तुओं की उपलब्धि और उपयोग उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करते हैं। इतना ही नहीं बल्कि व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति के निर्धारण में भी उसकी स्थिति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यक्ति की आर्थिक स्थिति एक ओर जहाँ उसके शारीरिक और बौद्धिक विकास को प्रभावित करती है। नहीं दूसरी ओर उसके जीवन शैली तथा व्यक्तित्व को भी निर्धारित करती है। भारतीय समाज में श्रमजीवी महिलाओं की संघर्षपूर्ण जीवन शैली का मूल्यांकन उनकी भूमिका दायित्वों में ही संभव है। परिवार में महिलाओं की भूमिका माँ एवं पत्नी के रूप में महत्वपूर्ण होती है। परिवर्तनों के बावजूद महिलाओं को पारिवारिक भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए परम्परागत लैंगिक असमानता का भी सामना करना पड़ता है। आज के भौतिकवादी परिवेश में महिलाओं का कामकाजी होना एक आवश्यकता सी बन गयी है। घर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पुरुषों और महिलाओं दोनों का ही कार्य करना आवश्यक हो गया है। जिससे महिलाओं की परम्परागत प्रस्थिति एवं भूमिका में परिवर्तन आये हैं। बाहर कार्य करने के कारण महिला को घर और बाहर दोनों ही क्षेत्रों की भूमिकाओं में कठिनाई उत्पन्न हो जाता है। “भूमिका एक समूह में एक विशिष्ट पद से संबंधित सामाजिक प्रत्याशाओं एवं व्यवहार प्रतिमानों का एक ऐसा योग है। जिससे कर्तव्यों एवं सुविधाओं दोनों का समावेश होता है। घर के बाहर जिन शर्तों और परिस्थितियों में पुरुष कार्य करते हैं। उन्हीं में महिलाएँ भी कार्य करती है। फिर भी वे घर में कार्य करने की जिम्मेदारियों

से मुक्त नहीं होती कार्य का दोहरा बोध उनसे शारीरिक मानसिक और भावनात्मक तनाव उत्पन्न करना है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ श्रम विभाजन का स्वरूप बदल रहा है और आधुनिक चुनौतीपूर्ण तथा भौतिकवादी युग में महिलाओं की रुचि पारिवारिक कार्यों के अतिरिक्त उन सभी कार्यों में भी होने लगी जिन पर कभी पुरुषों का अधिकार होता था। आज महिलाओं की सहभागिता तीव्र गति से बढ़ते हुए पुरुष के साथ कंधे से कंधे मिलाकर चल रही है। कार्य का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जहाँ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति अंकित न कराई हो। आधुनिक युग में व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन को गतिशील बनाने तथा उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विचारधाराओं से जोड़ने की सूचना एवं सम्प्रेषण साधनों का प्रकार्यात्मक महल है। ये साधन न केवल व्यक्ति को उसके अधिकारों के प्रति सचेष्ट कराते हैं बल्कि उसे नवीन तथ्यों, ज्ञान एवं प्रविधियों का बोध कराते हुए उसके वैचरिकी जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। इतना ही नहीं संचार एवं सूचना स्रोतों के नवीन साधना व्यक्ति की दूरदर्शिता, सामाजिक, राजनैतिक जीवन के प्रति जागरूकता तथा सहभागिता में की महत्वपूर्ण अदा करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्याय में यह पता लगाने का प्रयास किया है कि श्रमजीवी महिलाएं परिवार और कार्य के बीच किस प्रकार के समायोजित है। (पाण्डेय कान्ती 1975) परिवार का प्रभाव बच्चों पर बहुत अधिक पड़ता है। सामान्य तौर पर मान्यता यह रही है कि एकांकी परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार में बच्चों का देख-रेख तथा पालन-पोषण अधिक अच्छी तरह हो जाता है। क्योंकि संयुक्त परिवार में बहुत से लोग होते हैं इस लिए बच्चों की देखभाल एवं पालन-पोषण अच्छी प्रकार से हो जाता है। दूसरी तरफ एकांकी परिवार में पति-पत्नी दोनों के नौकरी पर चले जाने से बच्चे अकेले रह जाते हैं। उनकी देखभाल नौकरों के सहारो होती रहती है जिससे की बच्चों का सर्वांगीण विकास अच्छी तरह से नहीं हो पाता है। प्रायः समाज द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि महिलाओं द्वारा नौकरी करने से उनके बच्चों का समुचित विकास नहीं हो पाता है। नाई और हांकमैन (1973) ने यूरोपीय माताओं के अध्ययन, श्रीवास्तव द्वारा किये गये अध्ययन (1972) में कुछ पत्रिकाओं द्वारा नौकरी करने वाली माताओं के सर्वेक्षण, ग्लासगो विश्वविद्यालय में किये गये स्कार्ट के अध्ययन (1965) में तथा भारत में किये गये प्रमिला कपूर के अध्ययन (1973), श्रीवास्तव द्वारा किये गये अध्ययन (1972) में कुछ पत्रिकाओं द्वारा नौकरी करने वाली माताओं

के सर्वेक्षण (धर्मयुग: 1968) जिसमें यह पूछा गया है कि उनके विचार में उनकी नौकरी का उनके बच्चों पर क्या असर पड़ता है इन सभी अध्ययनों में से सही निष्कर्ष निकलता है कि माताओं द्वारा नौकरी करने का बच्चों के जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है और न ही उनके व्यक्तित्व के विकास में बाधा पहुंचती है और न ही उनके शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर कोई बुरा असर पड़ता है। अग्र वर्णित सारणी में हमने यही देखने का प्रयास किया है। कि परिवार के प्रकार का और साथ ही नौकरी का बच्चों के ऊपर कैसा प्रभाव पड़ता है।

मानव जिस समाज में रहता है। उससे संगठन और व्यवस्था का होना अत्यंत आवश्यक है पारिवारिक, सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति के निश्चित स्थान को उसकी प्रस्थिति या पद कहते हैं। इस स्थिति से संबंधित कुछ निश्चित क्रियाएं होती हैं पारिवारिक संगठन को बनाये रखने के लिये अथवा पारिवारिक संरचना को एक स्थिर रूप देने के लिये यह आवश्यक होता है। कि परिवार में प्रत्येक व्यक्ति का स्थान दूसरे सदस्यों के संघर्ष में निश्चित कर दिया जाये। यही स्थान परिवार में व्यक्ति की प्रस्थिति कहलाती है। एक समय में एक परिवार में एक ही व्यक्ति की अनेक स्थितियां हो सकती हैं।

70 वर्षों में भारत में जो महिलाओं में सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, उनसे यहां की पूरी आबादी प्रभावित हुई है। शहरों में हरने वाले मध्यम वर्गीय शिक्षित लोगों को आर्थिक प्रभावित किया है। सरकार स्वतंत्रता के बाद की बढ़ती हुई सामाजिक आर्थिक परिस्थितियां महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसरों में काफी वृद्धि हुई और इन नई हालातों के फलस्वरूप इनके लिये अपनी समानता की अभिव्यक्ति और उनकी प्रतिष्ठा के लिये रास्ते खुल गये हैं। इस बात की पूरी सम्भावना है कि उन्हें जो नई राजनीतिक कानूनी सुविधाएं दी गयी हैं। अधिकांश आर्थिक प्रजातियों में स्त्रियों से काम लिया जा रहा है बल्कि शायद उनसे काम लेने की जरूरत महसूस की जा रही है। और लगभग सभी प्रणालियों में वे अपना जीवन-यापन के लिये और मनुष्य के नाते संतोष के लिये काम करती रही हैं। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के विकास के साथ ही स्त्रियों की भूमिका ज्यादा वास्तविक और सुस्पष्ट हो गयी है। उनके काम का महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखते हैं।

मूर्ति ने अपने अध्ययन में भारतीय श्रमजीवी महिलाओं की समस्याओं का विवेचन करते हुए लिखा है हमारी महिलाओं के वैतनिक और लाभ पूर्ण काम-धन्धों में बढ़ते प्रवेश से श्रम विभाजन की वह प्रचलित धारणा छिन्न-भिन्न हो गयी है। जिसके अनुसार पुरुष खेत के लिये और महिलाएं घर के लिये

मानी जाती थी। इतने पारिवारिक ढांचे और कर्तव्यों में हलचल पैदा कर दी है। इसने महिलाओं से यह चाहा है कि वे ऐसा शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक सामंजस्य स्थापित करें जो शायद ही उनके सम्मान, व्यक्तिगत तथा नीति के अनुकूल है। चन्द्रकला हाटे ने बहुत सारे अध्ययन श्रमजीवी महिलाओं पर किया है। इन्होंने अपने प्रथम अध्ययन में बम्बई से शिक्षित श्रमजीवी महिलाओं के सामाजिक आर्थिक अवस्था का अध्ययन है तथा दूसरा अध्ययन इन्होंने हिन्दु महिलाओं के कार्यों में आने से व्यक्तित्व और आर्थिक स्तर पर परिवर्तन आया है तथा विभिन्न समस्याओं के प्रति भारतीय नारी के बदले तरीके को भी प्रभावित किया है। इन्होंने बताया है कि भारतीय महिला के स्वतंत्रता के बाद राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक अवस्था में परिवर्तन हुआ है। इन्होंने बाम्बे, पूना, नागपुर और सोलापुर में रहने वाली भारतीय महिला तथा उन्नति करती हुई देश की महिला भारतीय महिला तथा उन्नति करती हुई देश की महिला परिवार को सहारा देने के लिये कार्य करती हैं। महिलाओं की दो अवस्था घर और बाहर में काम की जो की भूमिका करती है। महिलाओं की दो अवस्था घर और बाहर में काम की जो कि भूमिका करती है। महिलाओं की दो अवस्था घर और बाहर में काम की जो भूमिका है। उसको वह पूरी तरह स्वीकार नहीं करती है। बहुत सी औरते दुविधा और द्वन्द में रहती हैं और एक अपराध में ग्रसित हो जाती हैं। भारतीय महिला इन उलझे हुए स्वरूप को एक निश्चित धारा देने के लिये बहुत से सुझाव दिये हैं।

कामकाजी महिलाओं के कार्यों से संबंध में पदोन्नति के लिए सेवा काल में प्राप्त सहयोगियों एवं उच्चधिकारियों की कार्य के प्रति सकारात्मक प्रक्रिया से संतुष्टि आदि ऐसे कारक जो श्रमजीवी महिलाओं के लिए पदोन्नति के अवसर प्रदान करते हैं। इन श्रमजीवी महिलाओं की कार्यस्थल पर प्रस्थिति के संदर्भ में इनसे प्रश्न पूछा गया। उन्होंने जो इस संदर्भ में उत्तर दिया वो निम्न तालिका के अनुसार प्रस्तुत है।

भारत के संदर्भ में यदि देखें तो महिलाओं की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं:-

- सर्वप्रथम महिलाओं के राजनीतिक स्थिति में सुधार के लिए प्रयास करने होंगे। महिला संगठनों, स्वयं सेवी संस्थाओं को इस दिशा में प्रयास करने होंगे।
- महिलाओं को इनके कानूनी अधिकारी की जानकारी, महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिये गये निर्देशों का सख्ती से पालन, शोषण,

उत्पीड़न सम्बन्धी मामलों का जल्दी निराकरण, महिला मामलों में पुलिस की पूरी सजगता एवं सक्रियता महिलाओं के लिए पृथक महिला थानों की स्थापना आदि महिलाओं का शोषण रोकने के लिए आवश्यक है। वर्तमान समय में लागू महिला सम्बन्धी कानूनों में व्याप्त विसंगतियों को दूर करना जिससे महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान कानूनी और व्यावहारिक रूप में सभी मानवाधिकार हासिल हों।

- महिलाओं को अपनी मानसिक प्रवृत्ति में परिवर्तन लाना होगा जिससे उनमें आत्म विश्वास में वृद्धि होगी।

निष्कर्ष

21वीं शताब्दी की महिलाओं में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा बहुत प्रबल हो गयी है वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना चाहती है। इससे उसमें आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह प्रगति की सीढ़ी पर चढ़ती जायेगी एवं समाज में फली बुराई रूपी अन्धकार को दूर कर सकेगी। नारियों के लिये आत्म अभिव्यक्ति और आत्म सन्तुष्ट के अवसर अनुचित रूप से सीमित रखे गये हैं। मशीनीयुग ने घर से बाहर ही वस्तु उत्पादन इतना अधिक बढ़ा दिया है। कि अंशतः आर्थिक आवश्यकता के चलते महिलायें अब घर से बाहर काम अपनाने लगी हैं।

अतः महिलाएं समाज का अनिवार्य अंग है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ राजनीति के क्षेत्र में उनकी अहम भूमिका है। जैसे-जैसे शहरों के साथ ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में राजनीति जागरूकता आ रही है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार और बदलते सामाजिक परिवेश में राजनीति में महिलाएँ आगे आ रही है और केन्द्रीय, प्रान्तीय, स्थानीय शासन में अपनी भागीदारी निभा रही है। इसलिये महिलाओं को सशक्त और सुदृढ़ बनाने पर ही समाज सुदृढ़ होगा। महिलाओं को सुदृढ़ करने के लिये उनका शिक्षित होना आवश्यक है ताकि अपने अधिकारों को समझ कर समाज एवं राष्ट्र का विकास कर सके।

संदर्भ सूची

1. सत्येन्द्र नाथ मजुमदार, विवेकानंद चरित्र, प्रकाशित 1971.
2. शरदचन्द्र चक्रवती, विवेकानंद जी के संग में, प्रभाव प्रकाशन, दिल्ली।

3. ओम प्रकाश, हिंदू विवाह, चतुर्थ संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
4. डा. रानी, आशु (1999) महिला विकास कार्यक्रम, ईनाश्री पब्लिशर्स, जयपुर
5. डा. कुलश्रेष्ठ, लक्ष्मी रानी, कुरुक्षेत्र, अक्टूबर-नवम्बर 1997.
6. सिंह (सोनल) ज्ञान जगत स्वरूप संरचना एवं विकास, भोपाल म.प्र. ग्रंथ अकादमी 1998
7. सक्सेना (एल.एस.) पुस्तकालय एवं समाज, भोपाल, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2004